

Spot rubber rules steady

Kottayam, June 7



Spot rubber was steady on Thursday on slight recovery in domestic and global futures. RSS-4 finished flat at ₹126 a kg, according to traders and the Rubber Board. The grade was quoted unchanged at ₹122 by dealers. June futures improved to ₹125.80 (124.87), July to ₹129 (127.78), August to ₹131.38 (129.52) and September to ₹129.51 (129.25) on the National Multi Commodity Exchange. RSS-3 (spot) firmed up to ₹113.23 (112.66) at Bangkok. Its June futures improved to ₹105.43 (104.12) on the Tokyo Commodity Exchange. OUR CORRESPONDENT

Research body voices concern over import of cheap natural rubber

V SAJEEV KUMAR

Kochi, June 7

The Indian rubber industry's over-dependence on imported, cheap natural rubber may be highly unsustainable, posing serious challenges for its growth and competitiveness, said Rubber Research Institute of India.

There are clear indications that the industry is losing its momentum and its contributions to the economy are on the decline in recent years, a study carried out by the RRII said.

There are structural changes happening to the industries of major natural rubber exporting countries and availability of cheap rubber in the international market cannot be taken for granted, it observed.

Natural rubber has a dominant role in the rubber industry, as it constitutes 66 per cent of the total amount of rubber the industry consumes. In recent years, rubber production has been on the decline as a result of growers abstaining from tapping the trees because of non-remunerative price.

Despite declining do-

mestic production, rubber consumption and the industry continued to grow, albeit at lower rates, with substantial imports. The longer the decline continues, the more difficult it will be to reverse the trend because of the perennial nature of the crop, the study said.

Indian rubber industry is too important for the economy to be left to the uncertainties and vagaries of supply issues in the global market for long.

The study, therefore, suggested proactive steps to sustain the domestic rubber production base with adequate public investment are urgently required to ensure sustained domestic supply to the industry.

In a major relief to farmers who are reeling under stress of low rubber price, another study by the institute suggested cultivation of cocoa as a potential inter-crop for mature rubber under tapping.

RRII has successfully demonstrated the initiative on a small landholding in Kerala representing the central traditional rubber growing tract in India.

बारिश में रबड़ टैपिंग पर प्रोड्यूसर्स को मिली टायर इंडस्ट्री से मदद

MRF ने केरल, कर्नाटक में उत्पादकों को मॉनसून टैपिंग के लिए 6.8 करोड़ के रेन गार्ड बांटे

कृष्ण कुमार पीके | कोच्चि |

मॉनसून सीजन में कीमतें गिरने से रबड़ टैपिंग में कमी को देखते हुए इस साल टायर इंडस्ट्री छोटे उत्पादकों की मदद करने की तैयारी कर रही है। देश की प्रमुख टायर कंपनी एमआरएफ लिमिटेड ने केरल और कर्नाटक के कुछ उत्पादकों के बीच मॉनसून टैपिंग के लिए 6.8 करोड़ की कीमत के रेन गार्ड बांटे हैं, जिनसे बारिश से होने वाले नुकसान को कम किया जा सके। कुछ और कंपनियों की तरफ से भी ऐसे कदम उठाने की उम्मीद की जा रही है।

रबड़ प्रोड्यूसर सोसायटी की तरफ से लागू किए गए प्रोग्राम से 0.5 हेक्टेयर पर रबड़ की खेती करने वाले कर्नाटक के 12,000 और केरल के 10,000 उत्पादकों को फायदा मिलेगा। पिछले साल सीजन के बाद हुई बारिश ने रबड़ टैपिंग पर काफी बुरा असर डाला था, जिससे कीमतें काफी गिर गई थीं। इससे रबड़ बोर्ड को प्रॉडक्शन टारगेट को 8 लाख टन से घटाकर 7.3 लाख टन करना पड़ा था, क्योंकि रेन गार्ड्स नहीं लगाने से कई उत्पादक टैपिंग से दूर रहे थे। 2017-18 में आखिरकार

- रबड़ प्रोड्यूसर सोसायटी की तरफ से लागू किए गए प्रोग्राम से 0.5 हेक्टेयर पर रबड़ की खेती करने वाले कर्नाटक के 12,000 और केरल के 10,000 उत्पादकों को फायदा मिलेगा

कुल प्रॉडक्शन 6.94 लाख टन का रहा, जिससे 4.69 लाख टन का रिकॉर्ड इम्पोर्ट देखने को मिला। रबड़ बोर्ड के एक सीनियर एग्जिक्यूटिव ने कहा, 'अगर बारिश के मौसम में टैपिंग नहीं होती है तो इससे प्रॉडक्शन 30 पसैंट कम हो जाएगा। इससे पहले 70 से 80 पसैंट उत्पादक मॉनसून के दौरान टैपिंग करते थे। अब यह घटकर 50 पसैंट हो गया है।'

कम कीमतों से उत्पादक मॉनसून सीजन में टैपिंग से कन्नी काट रहे हैं। शीट रबड़ की सालाना औसत कीमत 2017-18 में कम होकर 129.80 रुपये प्रति किलो हो गई थी, जो पिछले साल 135.49 रुपये प्रति किलो थी।

अभी यह 126 रुपये प्रति किलो पर मिल रही है। छोटे रबड़ उत्पादक बाबू जोसेफ ने कहा, 'रेन गार्ड्स की मौजूदा कीमतों को देखते हुए इस सीजन में टैपिंग के लिए कोई आगे नहीं आएगा। उत्पादकों को केरल सरकार की समर्थन मूल्य योजना के तहत भी पैसे नहीं मिल रहे हैं।'

राज्य की समर्थन मूल्य नीति यह सुनिश्चित करती है कि उत्पादकों को मार्केट प्राइस के साथ अंतर पर सब्सिडी देकर 150 रुपये प्रति किलो की कीमत दी जाएगी। पिछले कुछ महीनों से इस योजना के तहत उत्पादकों को बिल सौंपने के बाद मिलने वाले पेमेंट्स में देरी हो रही है। आखिरी कुछ महीनों की पेमेंट्स को रोक दिया गया है।

दरअसल, केरल सरकार के पास फंड की कमी है। इसलिए वह योजना के तहत भुगतान नहीं कर पा रही है। रबड़ के एक प्रमुख डीलर जॉर्ज वैली ने कहा, 'जुलाई तक कीमतें बढ़कर 130 रुपये प्रति किलो तक पहुंच सकती हैं क्योंकि घरेलू मार्केट में रबड़ की कमी देखने को मिलेगी। कीमतें बढ़ने से कुछ और रबड़ किसान रबड़ टैपिंग के लिए प्रेरित हो सकते हैं।'

